उत्पादन लेने के लिए सन्तुलित आहार में सूखा घास, भूसा, पराली व सेलड़ू इत्यादी के साथ-साथ खली दाना खनिज मिश्रण खिलाना अति आवश्यक है। घटिया किस्म के सूखे व हरे चारे में प्रोटीन, ऊर्जा एवं खनिज मिश्रण इत्यादी की कमी को पूरा करने के लिए विश्व विद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ''चाकलेट'' अर्थात पौष्टिक यूरिया शीरा खनिज विटामिन एवं डी युक्त ईंट विकसित की गई है। पशुओं की क्षमता के अनुसार उत्पादन के लिए हरे व सूखे चारे के साथ-साथ इस 'चाकलेट' को प्रतिदिन 5 से 7 मिनट तक चटाना अति आवश्यक है। ऐसा करने से पशुओं की ना केवल शारीरिक वृद्धि होती है अपितु दूध देने एवं प्रजन्न क्षमता इत्यादि में भी सुधार होता है।

छोटे बछड़े व बछड़ियों को 20 से 25 ग्राम अर्थात 3 से 4 चम्मच खनिज मिश्रण प्रतिदिन पशु आहार में मिला कर देना चाहिए। प्रत्येक व्यस्क पशु को 50 से 60 ग्राम खनिज मिश्रण पशु आहार में मिलाकर प्रतिदिन देना चाहिए। दुधारू पशुओं को उनके दुग्ध उत्पादन पर 80 से 100 तक ग्राम खनिज मिश्रण देना अनिवार्य है।

आलेख

डा. देवेश ठाकुर डा. शिवानी कटोच एवं डा. आलोक शर्मा

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

चौ. स. कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय

प्रसार पत्रक क्रमांक - 6

सूखे चारे को पौष्टिक कैसे बनाया जाए?

सौजन्य से

National Agricultural Innovation Project on Biodiversity

जैव विविधता

राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर 176 062

भूसे को अधिक पोष्टिक बनाने की आवश्यकता

हमारे देश में पशुओं को वर्ष भर हरा चारा उपलब्ध कराना कठिन है। जिस मौसम और समय में पशुओं को अच्छे किस्म का चारा उपलब्ध न हो तो हम लोग अपने पशुओं को गेंहू का भूसा बाजरा और मक्की की कडवी आदि खिलाते हैं। परन्तु इन सब में अधिक पोषक तत्वों जैसे प्रोटीन खनिज लवणों की कमी रहती है। साथ ही यह सब पशुओं के लिए बेस्वाद और अरूचिकर रहते हैं। इस अवस्था में चारे में उपयुक्त विधि से यूरिया डालकर इन्हें और अधिक पौष्टिक एवं स्वादिष्ट बनाया जा सकता है।

सूखे चारे को यूरिया द्वारा अधिक पौष्टिक बनाने की विधि

1. लगभग 100 कि0ग्रा0 भूसे के लिए 80 से 85 लीटर पानी में 4 कि0ग्रा0 यूरिया अच्छी तरह से घोल लें।
2. इस भूसे को फर्श पर अच्छी तरह से फैला दें ताकि एक फुट की परत बन जाए और उस परत पर यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
3. एक बार फिर से पर्त बनाएं और छिड़काव करें।
4. परत पर परत बनाते हुए अंत में इसे पालिथिन से ढक दें।
5. परत को पालिथिन या गन्नी बैग से ढकना जरूरी है ताकि हवा अन्दर ना जा सके।
6. यूरिया उपचारित भूसा हवा की अनुपस्थिति में नाइट्रोजन को प्रोटीन में बदलकर भूसे की पौष्टिकता बढ़ा कर उसे मुलायम कर देता है।
7. लगभग 21 दिनों में उपचारित भूसा खोलकर पशुओं को खिलाया जा सकता है।

उपचारित भूसा खिलाने की विधि

1. उपचारित भूसे को आवश्यकता अनुसार 21 दिन बाद थोड़ी मात्रा में ढेर के एक तरफ से निकालकर पशुओं को खिलाना शुरू करना चाहिए।
2. उपचारित भूसे को खिलाने से पहले हवा में फैला कर रखना चाहिए ताकि अवांछित अमोनिया गैस निकल जाए।
3. छह महीने से कम बछड़ों को यूरिया उपचारित भूसा ना खिलाएं।

यूरिया उपचारित भूसे से लाभ

1. पशु की प्रजनन शक्ति, दुग्ध उत्पादन व कार्यक्षमता बढ़ जाती है।
2. एक तिहाई दाने की मात्रा धीरे धीरे कम की जां सकती है।
3. उपचारित भूसा स्वादिष्ट होने के कारण पशु चाव से खाते हैं एवं भूसा बेकार होने से बचता है।
4. पशु की फीड़ की लागत कम की जा सकती है।

सावधानियां

1. यूरिया घोल बनाते समय पुराना घोल इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।
2. निर्धारित से अधिक मात्रा में यूरिया नहीं डालना चाहिए।
3. भूसे का ढेर काफी दबा – दबा कर बनाना आवश्यक है।
4. शीरे का छिड़काव उपचारित भूसा खिलाते समय ही करना चाहिए।

इस विधि का पालन यदि कृषक भाई व पशु पालक नियमित रूप से करें तो डेयरी व्यवसाय ज्यादा लाभप्रद बन सकता है तथा किसानों को भरपूर आमदनी हो सकती है।

पशुओं के लिए भी चाकलेट

प्रदेश में पशु पालक पशुओं को सूखा चारा जैसे भूसा, पराल व सेलडू इत्यादि खिलाकर ही पालते हैं। इससे न केवल पशुओं की बढ़ौतरी अपितु उत्पादन पर भी सीधा असर पड़ता है। पशुओं से उनकी क्षमतानुसार